अंक-योजना

अत्यंत गोपनीय

(केवल आंतरिक और प्रतिबंधित उपयोग के लिए)

वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय प्रमाणपत्र पूरक परीक्षा, 2026 (Supplementary Exam.)

विषय-हिंदी (CORE) -302

(प्रश्न-पत्र कोड **2/7/2**)

सामान्य निर्देश:-

1	आप जानते ही हैं कि परीक्षार्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में 'मूल्यांकन' सबसे महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी गलती भी गंभीर समस्याओं का कारण बन सकती है, जिसका प्रभाव परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा-प्रणाली और शिक्षण पर पड़ सकता है। आपसे अनुरोध है कि गलतियों से बचने के लिए मूल्यांकन शुरू करने से पहले 'मूल्यांकन दिशा-निर्देशों' को ध्यान से **अवश्य** पढ़ें, समझें और मूल्यांकन करते समय उनका पालन **अवश्य** करें।
2	"मूल्यांकन एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं, किए गए मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं की गोपनीयता से संबंधित है। किसी भी तरह से इसे सार्वजनिक करने से परीक्षा-प्रणाली पटरी से उतर सकती है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकती है। इस नीति/दस्तावेज को किसी से भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट में छापना आदि बोर्ड और आईपीसी के विभिन्न नियमों के अंतर्गत कार्यवाही को आमंत्रित कर सकता है।"
3	मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए। इसे किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंक-योजना का सख्ती से पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन करते समय, जो उत्तर नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं, उनका सत्यता एवं प्रासंगिकता के आधार पर मूल्यांकन किया जाए। योग्यता-आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और उचित अभिव्यक्ति पर उचित अंक दें।
4	अंक-योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझावात्मक बिंदु दिए गए हैं। ये केवल दिशा-निर्देश हैं।
5	प्रधान परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा मूल्यांकित पहली पाँच उत्तर पुस्तिकाओं का पुनरावलोकन अवश्य करना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है। यदि मूल्यांकन में कोई भिन्नता है तो विचार-विमर्श और चर्चा के बाद उसे दूर किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए शेष उत्तर पुस्तिकाएँ यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएँ।
6	मूल्यांकनकर्त्ता उत्तर सही होने पर सही (✓) का निशान लगाएँ, गलत उत्तर के लिए क्रॉस (**X**) का निशान लगाएँ। मूल्यांकन करते समय सही (✓) का निशान नहीं लगाने पर भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है और यह आभास होता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिया गया।
7	यदि किसी प्रश्न में उपभाग हैं तो प्रत्येक उपभाग के लिए दाईं ओर बिना घेरा लगाए अंक दें। प्रश्न के विभिन्न उपभागों पर दिए गए अंकों को जोड़कर बाएं हाथ के हाशिए में प्रश्न संख्या के समीप लिखकर घेरा लगाएँ। इसका सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।
8	यदि किसी प्रश्न में कोई उपभाग नहीं है तो बाईं ओर हाशिये में प्रश्न संख्या के समीप अंक दिए जाने चाहिए और घेरा लगाया जाना चाहिए।

9	यदि किसी परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न का उत्तर लिखा है तो अधिक अंक पाने वाले प्रश्न के उत्तर को ही स्वीकार किया जाना चाहिए तथा अन्य उत्तर पर 'अतिरिक्त प्रश्न' लिखकर काट दिया जाना चाहिए।
10	वर्तनी सम्बन्धी एक ही अशुद्धि के लिए बार-बार अंक न काटा जाए।
11	अंकों के पूरे पैमाने 0 से 80 अंक का उपयोग किया जाए। यथोचित उत्तर पर पूरे अंक देने में संकोच न करें।
12	प्रत्येक परीक्षक को अनिवार्य रूप से पूरे कार्यसमय अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे मूल्यांकन कार्य करना होगा तथा मुख्य विषयों में प्रतिदिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं तथा अन्य विषयों में प्रतिदिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होगा (विवरण दिशा-निर्देशों में दिया गया है)। यह पाठ्यक्रम में कमी तथा प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की संख्या को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
13	सुनिश्चित करें कि आप परीक्षक द्वारा अतीत में की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की गलतियाँ न करें:- ● उत्तर पुस्तिका में उत्तर या उपभाग को बिना मूल्यांकन के छोड़ देना ● किसी उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना ● उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग ● उत्तर पुस्तिका के अंदर के पृष्ठों से मुखपृष्ठ पर अंकों का गलत अंकन ● मुखपृष्ठ पर प्रश्न के अनुसार अंकों का गलत योग ● मुखपृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग ● गलत कुल योग ● शब्दों और अंकों में लिखे कुल योग का समान न होना ● उत्तर पुस्तिका से ऑनलाइन अंकतालिका में अंकों का गलत अंकन ● उत्तरों को सही के रूप में चिह्नित किया जाना लेकिन अंक न दिया जाना ● उत्तर का आधा या एक हिस्सा सही और बाकी को गलत चिह्नित करना लेकिन कोई अंक न देना
14	उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन के समय यदि उत्तर पूर्णतः गलत पाया जाए तो उस पर क्रॉस (X) का निशान लगाकर शून्य (0) अंक दिया जाना चाहिए।
15	मूल्यांकन न किया गया कोई भी भाग, मुखपृष्ठ पर अंकन न होना या बाद में प्रकट हुई कोई भी त्रुटि मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाएगी इसलिए सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए यह फिर से दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण तरीके से पालन किया जाना चाहिए।
16	परीक्षकों को वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले मूल्यांकन के लिए दिए गए दिशानिर्देशों से परिचित होना चाहिए।
17	प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगा कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक मुखपृष्ठ पर अंकित किए गए हैं, अंकों का सही योग किया गया है तथा कुल योग को मुखपृष्ठ और लिखे गए अंतिम पृष्ठ पर अंकों और शब्दों में सही लिखा गया है।
18	परीक्षार्थी निर्धारित प्रोसेसिंग फीस का भुगतान करके अनुरोध पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने के हकदार हैं। सभी परीक्षकों/अतिरिक्त प्रधान परीक्षकों/प्रधान परीक्षकों को एक बार फिर याद दिलाया जाता है कि उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि मूल्यांकन प्रत्येक उत्तर के लिए अंकयोजना में दिए गए मूल्य बिंदुओं के अनुसार सख्ती से किया गया है।

MARKING SCHEME
Hindi Core (Subject Code - 302)
(PAPER CODE: 2/7/2)

Q.No.	EXPECTED OUTCOMES/VALUE POINTS	Marks
	खंड – क **(अपठित बोध)**	
1.	**पद्यांश पर आधारित प्रश्न :** (i) (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है। (ii) (D) लक्ष्यों की सिद्धि (iii) (A) केवल (I) (iv) जीवन एक संग्राम है जो सुख दुख रूपी किनारों के मध्य निरंतर गतिमान है। (v) • जो स्वयं पर विश्वास रखते हैं। • असफलताओं से सीख ग्रहण करते हैं। • गिरकर उठने का साहस रखते हैं। (कोई दो बिंदु अपेक्षित है) (vi) • विपरीत परिस्थितियों का सामना करना • संघर्ष करते हुए निरंतर कर्मरत रहना • विपरीत परिस्थितियों में भी लक्ष्य संधान की ओर अग्रसर रहना • दृढ़ संकल्प, धैर्य तथा परिश्रम के आलोक से मंजिल तक पहुँचना (कोई दो बिंदु अपेक्षित हैं)	**(8)** **1** **1** **1** **1** **1+1=2** **1+1=2**
2.	**गद्यांश पर आधारित प्रश्न :** (i) (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था (ii) (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना (iii) (C) केवल कथन II और III सही हैं। (iv) • ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी सुविधा पहुँचाना। • किसानों के जीवन को सरल बनाना (v) • इंटरनेट, डिजिटल भुगतान • ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन	**(10)** **1** **1** **1** **½+½=1** **½x4=2** **1+1=2**

	(vi) • मौसम की जानकारी • फसल बीमा योजनाएँ एवं बाजार के भाव की जानकारी (कोई दो) (vii) • डिजिटल साक्षरता की कमी • धीमा इंटरनेट एवं अनियमित बिजली आपूर्ति (कोई दो)	1+1=2
	खंड – ख **(अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)**	**22**
3.	**किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :** (i) • सभी वर्ग तथा स्तर के लोग संचार के इन माध्यमों से लाभ उठाते हैं। • जटिल भाषा के प्रयोग से बोधगम्यता समाप्त हो जाती है। • श्रव्य-दृश्य माध्यम होने के कारण कठिन जटिल या भारी भरकम शब्दों का प्रयोग करने से समाचार का अर्थ बिगड़ सकता है। (कोई दो बिंदु अपेक्षित) (ii) • लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। • किसी बड़ी घटना के दृश्यों, उपस्थित लोगों के कथनों को ओ.बी.वैन के जरिये सीधे दिखाना या बताना। (iii) • उल्टा पिरामिड शैली। • सबसे पहले महत्वपूर्ण घटना को प्रस्तुत किया जाता है तदुपरांत घटते क्रम से क्रमशः उसके बाद के महत्त्व को प्रस्तुत करते हैं। (iv) • अर्थ जीवन का मूल आधार, जीवन में विशेष महत्व • आम आदमी से लेकर खास आदमी के क्रियाकलापों में आर्थिक गतिविधियाँ, और उससे संबंधित बातचीत • समाज के प्रत्येक वर्ग की रुचि • समाचार पत्र में संपूर्णता (v) • संपादक के नाम पत्र को **<u>क्यों ?</u>** • इसके माध्यम से विभिन्न समस्याओं और मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। • जन समस्याओं को भी उठाते हैं। जनमत का प्रतिबिंब • नए लेखकों के लिए लेखन की शुरुआत करने का माध्यम	**(4x2=8)** **2** **2** **1+1=2** **½x4=2** **½x4=2**
4.	**दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख :** आरंभ – 01 अंक विषयवस्तु – 03 अंक प्रस्तुति – 01 अंक भाषा – 01 अंक	**1x6=6**
5.	**किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर :**	**(2x4=8)** **4**

	(i) • कहानी के लंबे संवादों को छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है। • पात्रों के चरित्र-चित्रण के संवादों को स्थानीय रंग में रंग कर • संवादों को प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक की सहायता लेकर। • पात्रों के व्यक्तित्व, प्रेरणा और संघर्ष को संवादों के माध्यम से प्रकट कर। • पात्रों के संवाद में स्वाभाविकता और सजीवता लाकर। (कोई चार बिंदु अपेक्षित) (ii) • सुसंगत होने से अभिप्राय है कि विषय वस्तु का उचित तालमेल के साथ परस्पर जुड़ा होना। • विषयवस्तु में अगर दो बातें एक दूसरे का खंडन करती हों, तो यह लेखन का ही नहीं, किसी भी तरह की अभिव्यक्ति का एक अक्षम्य दोष है। • लेखन में सुसंबद्धता के साथ सुसंगतता आवश्यक है, नहीं तो पाठक उसे अस्वीकार कर देंगे। • उदाहरण : राजनीति की ठोस चर्चा के बीच अचानक खेलों की चर्चा, जिनका आपस में कोई तालमेल न हो। (iii) • रेडियो श्रव्य माध्यम है। • रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व होता है। • रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं। • पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं। • नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है। • इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है। • दृश्यों का निर्माण भी ध्वनि संकेतों के माध्यम से किया जाता है। • संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है। • संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है। (कोई चार बिंदु अपेक्षित)	**4** **4**
	खंड – ग **(पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)**	**40**
6.	**काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर :** (i) (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) (ii) (B) कहीं बात और न बिगड़ जाए (iii) (D) बात को शब्दजाल से उलझाने और जटिल बनाने की ओर (iv) (C) कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	**5x1=5**

	(v) (B) व्यंग्य का	
7.	**किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :** (i) • शरद ऋतु में मौसम साफ़ हो जाता है, सर्वत्र चमकीली धूप बिखर जाती है, सभी दिशाएँ निखर जाती हैं, जो बच्चों को आकर्षित करती हैं। • वे शरद के स्वच्छ नील निरभ्र गगन मे पतंग उड़ाना चाहते हैं जो उनकी उमंग व उल्लास का रंग-बिरंगा सपना है। • पतंग की उड़ान के साथ-साथ उनकी कल्पनाओं की उड़ान भी असीमित है। जो आसमान को पार करना चाहती हैं। • तितलियाँ उनके सपनों को कलात्मक सौंदर्य प्रदान करती हैं। (कोई तीन बिंदु अपेक्षित) (ii) • संसार में सुख कभी भी स्थायी नहीं होता, दुख का प्रभाव सदैव मानव जीवन पर रहता है। • धनवान लोग समाज का शोषण कर संपत्ति, सत्ता और साम्राज्य स्थापित करते हैं, परंतु क्रांति की आशंका सदैव उन्हें भयभीत करती रहती है। • क्रांति के भय से सब कुछ छिन जाने की आक्रांता से शोषक वर्ग सदा आशंकित रहता है। • मानव जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों को दुख की छाया कहा है। (iii) • कवि के हृदय में कविता का मूल भाव आत्मसात करना आवश्यक है, तभी वह निजता (अहं) से मुक्त हो सकता है। • वही काव्य अथवा साहित्य सृजन सफल है जिसमें समग्र मानवता के कल्याण की भावना छुपी हो। • हृदय का विचार कल्पना का आश्रय लेकर शब्द के रूप में प्रस्फुटित होता है और विकसित होकर सुंदर रचना का रूप धारण करता है।	**(2x3=6)** **3** **3** **3**
8.	**किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :** (i) • कवि का जीवन एकाकीपन की कुंठा से ग्रस्त है। • उससे मिलने के लिए और उसकी प्रतीक्षा हेतु कोई भी उत्कंठित नहीं है। • कवि की वियोग-वेदना और एकाकी जीवन की व्याकुलता व्यक्ति कर देती है। (कोई दो बिंदु अपेक्षित) (ii) • सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। • भोर के समय आकाश का सौन्दर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है, यह उषा का जादू है। • नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लटे पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का	**(2x2=4)** **2** **2** **2**

	झिलमिलाता प्रतिबिम्ब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो जाते हैं। (iii) • बालक आकाश में खिले चाँद को देखकर उसे पाना चाहता है। • बालक को चाँद एक खिलौने के समान प्रतीत होता है। • वह उसे पाने की जिद्द करने लगता है। • बालक बिना सोचे समझे किसी भी वस्तु/बात के लिए जिद्द कर सकते हैं।	
9.	**किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :** (i) चूड़ाकर्म – बाल कटवाना, सिर मुंडवाना (पति की मृत्यु के उपरांत) • भक्तिन प्रत्येक वीरवार को वह अपना सिर घुटाकर चूड़ाकर्म करती जो लेखिका को अच्छा नहीं लगता। • लेखिका द्वारा इस कार्य को रोकने पर भन्तिन ने कहा ऐसा शास्त्र में लिखा है – 'तीरब गए मुँडाए सिद्ध'। (ii) • किसी से कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा देना पड़ता है। इंद्र को पानी का अर्ध्य चढ़ाने से ही वे वर्षा के जरिए पानी देंगे। • त्याग भावना से दिया गया दान ही फलीभूत होता है, जिसकी आवश्यकता है, उस वस्तु के दान से ही फल की प्राप्ति संभव है जल के संदर्भ में भी यही विकल्प है। • जिस तरह किसान अपनी ओर से पॉच-छह सेर अच्छे गेहूँ खेतों में बोता है, ताकि अच्छी फसल हो सके उसी तरह पानी की बुवाई से इंद्र देव प्रसन्न होकर अच्छी वर्षा करते हैं जो अच्छी फसल प्रदान करती है। • त्याग तो वह होता है जो चीज कम है, उसकी जरूरत है तो अपनी जरूरत को पीछे रख कर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे दो तो ही वह दान कहलाता है। (कोई तीन बिंदु अपेक्षित) (iii) • जाति प्रथा पर आधारित श्रम विभाजन को क्योंकि जातिप्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन भी करती है। • सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गो में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है। • देश में श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि और क्षमता पर आधारित नहीं होता, वह मनुष्य की क्षमता, प्रशिक्षण एवं अभिरुचि को दरकिनार करते हुए जन्म और जाति के आधार पर होता है। • जाति-प्रथा मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती परिणामतः आजीविका का संकट और जीवन निर्वहन मुश्किल हो जाता है। (दूसरे भाग के लिए दो बिंदु आवश्यक)	**(2x3=6)** **1+2=3** **3** **1+2=3**

10.	**गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर :** (i) (C) अजेय मंत्र की (ii) (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर (iii) (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है। (iv) (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे (v) (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना	**(5x1=5)**
11.	**किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर :** (i) • अनेक जीवन मूल्यों में बदलाव आ गया है, दो पीढ़ियों के बीच विचार सोच, रहन-सहन, खान-पान सभी में परिवर्तन दृष्टिगत होता है। • सामूहिकता का अभाव - यशोधर बाबू स्व उन्नति के साथ-साथ घर, परिवार एवं साथियों की उन्नति की चाह रखते थे परंतु नई पीढ़ी आत्मकेंद्रित है। • पुरानी पीढ़ी परंपराओं से लगाव रखती थी परंतु नई पीढ़ी परंपराओं को दकियानूसी कहती है। • पुरानी पीढ़ी में पूर्वजों तथा बड़ों के प्रति आदर मान-सम्मान था- तर्क-वितर्क का कोई विकल्प नही था – बड़ों का आदेश सर्वोपरि था – परंतु नई पीढ़ी के आचरण में इस जीवन मूल्य में घोर गिरावट है। • पुरानी पीढ़ी त्याग की भावना से ओतप्रोत थी – नई पीढ़ी में स्वार्थ भावना एवं निज प्रवृति के भाव प्रबल हैं। (ii) • शिक्षा से गहरा लगाव था। • शिक्षा ही सर्वांगीण विकास करती है। • शिक्षा से ही व्यक्ति अपनी उन्नति के विषय में सोच सकता है। • समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है। • खेती के काम में रूचि न होना। • जन्मभर खेती के काम से कुछ हासिल नहीं हो सकेगा। • पिता और दादा का समय बीत गया, अब इस खेती से जीवन यापन करना मुश्किल है। • शिक्षा प्राप्त करने से नौकरी या व्यापार कुछ भी किया जा सकता है। (iii) • 'अतीत _ _ _ _ _ पाँव' में अतीत में बसे सुंदर, सुनियोजित नगर का वर्णन है। • लेखक ने उस सभ्यता में झाँककर उस समय के निवासियों के क्रिया कलापों को अनुभव किया है।	**(2x5=10)** **5** **5** **5**

	• वहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था का वर्णन हैं। • अतीत के निवासियों की उपस्थिति का अहसास होना। • बैलगाड़ी से रूनझुन की ध्वनि की आहट का अहसास। • रसोईघर की खिड़की से झाँकने पर पक रहे भोजन की गंध महसूस होना। • उस समय की मूर्तियाँ, औजार, आभूषण आदि का वर्णन। • अतीत की संस्कृति एवं सभ्यता का वर्णन। (कोई पाँच बिंदु अपेक्षित)	
12.	**किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर :**	**(2x2=4)**
	(i) • क्रय शक्ति को बढ़ावा देता है। • धन जोड़ते रहने से अपनी संचित धन राशि देखकर गर्व होता है। • पैसे से ही व्यक्ति की समाज में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा-स्थान का निर्धारण होता है। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	**2**
	(ii) • लुट्टन पहलवान के ढोलक की आवाज़ मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी। • महामारी की त्रासदी से व्याप्त अवसाद में ढोलक की आवाज़ से ग्रामीणों में उत्साह का संचार होता था। • ढोलक की आवाज़ ग्राम वासियों को जिजीविषा की शक्ति प्रदान करती थी। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	**2**
	(iii) • भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गई। • सुविधाओं की इच्छा को छिपाना, असुविधाओं के बीच रहना। • भक्तिन महादेवी की अभिभावक आत्मीय बन गई जिसे वह खोना नहीं चाहती थीं। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	**2**
	- o 0 o -	